Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

8. भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा-दर्शन और उपभोक्तावाद में उपभोक्ता टिप्पणियाँ : एक अध्ययन

कामेश्वर सिंह
Assistant Professor
GIPS Greater Noida U.P. affiliated to CCS University Meerut
ई-मेल:kesarsingh2000@gmail.com, मो.- 9415492933

शोध सारांश

दार्शनिक परंपरा में भाषा शास्त्र को लेकर भी काफी चिंतन किया गया है। या यूं कहें की भाषा शास्त्र का अपना एक दर्शन है। जिसे हम भाषा दर्शन के नाम से जानते है। इसमें ध्वनि, शब्द, शब्द का अर्थ तथा शब्द अर्थ का संबंध पर विचार किया गया है। इस भाषा के दर्शन की उत्पत्ति वेदों, उपनिषदों से होते हुए वैदिक प्रातिशाख्यों, निरूक्तों तक आती है। उसके बाद न्याम,मीमांसा, वेदांत, व्याकरण तथा शैव दर्शन में इसका पूर्ण विकास हुआ है। ज्ञान को अर्जित करने में भाषा का बहुत बड़ा महत्व होता है इसीलिए जिन्होने भाषा के स्वरूप उसके अर्थ पर विस्तार पूर्वक विचार किया है। लगभग प्रत्येक भारतीय दार्शनिक संप्रदाय के आचार्य ने शब्द तत्व के ऊपर विचार किया है। कई दर्शन में इसे प्रमाण के रूप में भी मान्यता प्राप्त है। इसी क्रम में कश्मीर शैव दर्शन में भर्तृहरि के दर्शन से बहुत कुछ साम्य मिलता है। तंत्रालोक में अभिनवगुप्त ने कश्मीर शैव दर्शन के महान दार्शनिक भर्तृहरि के नाम का उल्लेख कई स्थानों पर किया है। महाभाष्य में पाणनी ने भाषा दर्शन को विस्तार से बताया है, तथा इसके साथ भाषा दर्शन के विकास में बौद्ध दर्शन और जैन दर्शन में भाषा दर्शन का भी अध्ययन किया जाएगा। इसी के साथ 500 ई. के भर्तृहरि के पहले भी अनेक वैयाकरण दार्शनिक हो चुके थे जिनका भारतीय ज्ञान परम्परा में भाषा दर्शन का विकास के क्रम में भाषा दार्शनिकों एवं उनके दर्शन का अध्ययन एवं चर्चा इस शोध-पत्र में विस्तार पूर्वक किया गया है।

मुख्य शब्दावली: भाषा दर्शन, प्रातिशाक्यों, निरूक्तों, भारतीय दार्शनिक संप्रदाय।

प्रस्तावना-

भारतीय ज्ञान परंपरा की अवधारणा लोक संस्कृति रूप आधारित है, जिसमें शस्त्र और शास्त्र के ज्ञान को समान महत्व दिया गया है। भारत की ज्ञान परंपरा ईश्वर केंद्रित नहीं अपितु मानव केंद्रित है, जो मानव जीवन की सफलता और कल्याण के लिए लोक संग्रह के लिए प्रेरित करती है। भारतीय चिन्तन एवं दर्शन में भाषा की प्रकृति, उसके स्वरूप और अर्थ की समस्या पर विचार काफी पुराना है। इसमें मीमांसा, न्याय, वैशेषिक, बौद्ध और जौन आदि चिन्तन परंपराएँ इनमें प्रमुख है। प्राचीन भारतीय चिन्तन में दर्शन के जो छः प्रधान संप्रदाय है उनमें भाषा दर्शन पर किसी न किसी कोण से उस पर अवश्य विचार हुआ है।

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भाषा दर्शन में भाषा की समस्या को लेकर विचार रखे गए, जिनमें तीन के प्रमाण प्रमुख रूप से मिलते है।

1. वैयकरणिक चिन्तन के संप्रदाय
2. न्याय और वेदांती चिन्तन और मीमांसा चिन्तन के संप्रदाय
3. अलंकारशास्त्र अथवा साहित्यशास्त्र के संप्रदाय

1. जिनमें वैयाकरण सबसे प्राचीन है जिनमें यास्क पाणिनि के भी पूर्ववर्ती माने जाते है। पाणिनि ने अपने लब्धकीर्ति ग्रंथ अष्टाध्यायी में संस्कृति संरचना के सिद्धांत गढ़े और उन्हे वैज्ञानिकता से साथ नियमबद्ध किया।

जैसे- उपमानं शब्दार्थप्रकृतावेव- (अष्टाध्यायी-6/2/40), स्वं रूपं शब्दस्याशब्दसंज्ञा (अष्टाध्यायी-1/1/64)

कात्यायन ने उस पर वार्तिका लिखा और पाणिनि के सूत्रों में वृद्धि की जैसे- सिद्धेशब्दार्थसम्बन्धे।

पाणिनि के पश्चात व्याकरण का परंपरा का सबसे बड़ा चिन्तन भर्तृहरि के माना जाता है। इनका कथन है कि ध्वनियाँ और अर्थ वाक् प्रक्रिया के दो जुड़वा पक्ष हैं, अतः शब्द को एक अविभाज्य इकाई के रूप में लिया जा सकता है। एकोअनवयश शब्द।(वाक्यपदीयम् 11,1) इन्होने शब्दार्थ के बारे वाक्यपदीयम् में लिखा है-

नित्याः शब्दार्थसम्बन्धा समाम्नाता महर्षिभिः।
सूत्राणां सानुतन्त्राणां भाष्याणांय प्रणेतृभिः।। (ब्रह्मखण्ड)

शब्द अर्थ और दोनों का संबंध नित्य है।

वाक्य उस पौराणिक देव के समान है कि शब्द मानसिक अमूर्सन है, जो अंदर की ओर भी देख सकता है और बाहर की ओर भी। ध्वनि वाक्य का वाह्य रूप है और अर्थ वाक्य का आंतरिक रूप है। इसी को सॉस्युर संकेतक(सिग्निफाइर) और संकेतित(सिग्निफाइड) कागज के दो तरफों के समान कहा है। और एक्या का टाँका लगा देता है।

2. शब्दार्थो की समस्या पर सर्वाधिक बहसें मीमांसकों ने उठाई हैं। इस श्रृखला का मूलपाठ जैमिनि का मीमांसा सूत्र है जिस पर शबर ने विस्तृत भाष्य लिखा। इसके साथ अनुषेगिक संप्रदाय तथा अद्वैत मतावलंबियों में अधिकांश मत पतंजलि से मिलते है। इनका योग सूत्र प्रमुख है। भारतीय न्याय दर्शन ने शब्दार्थ की समस्या पर गम्भीर विचार किया है। बौद्ध तार्किकों में नागार्जुन और दिंनाग विशेष रूप से उल्लेखनीय है। जिसने शून्य और अपोह के सिद्धांतो की विवेचना की जो सॉस्युर और देरिदा की विवेचनाओं में समानता मिलती है।
3. भाषा दर्शन और अर्थ दर्शन के संबंध में तीसरी धारा साहित्यिक चिन्तन अर्थात नाट्यशास्त्र, काव्यशास्त्र, अलंकारशास्त्र, शाहित्यशास्त्र की है। जिनका कालांतर छठी शताब्दी ईसा-पूर्व माना जाता है। जिसमें- भरत, भामह(काव्यालंकार), दंडी(काव्यदर्शन) वामन(काव्यलंकार सूत्रवर्ती) और उद्भट(काव्यालंकार सार-संग्रह) ने संबंधी प्रश्नो पर पुनर्विचार किया।

नवीं शताब्दी में आंनदबर्धन ने भरत के रस-सिद्धान्त को विधिपूर्वक काव्य पर चरितार्थ करते हुए काव्य भाषा की बहस को अपनी प्रसिद्ध कृति ध्वन्यालोक से स्थापित किया। जिसमें शब्द को वाचक तथा अर्थ को वाच्य कहा तथा इन दोनों के मेले उत्पन्न भाव या अर्थ को ध्वनि कहा है। वाच्यार्थ से भिन्न अर्थ व्यंग्यार्थ अथवा ध्वनि कहलाता है। ध्वनि के तारतम्य के आधार पर तीन भेद बताए है। 1. ध्वनि काव्य 2. गुणीभूतव्यंग्य- काव्य 3. चित्र-काव्य

हमारे जीवन में शब्दों का महत्वपूर्ण स्थान हैं क्योंकि यही वो एक माध्यम है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को व्यक्त कर सकते हैं। वास्तव में एक या एक से अधिक वर्णों से बनी हुई स्वतंत्र सार्थक ध्वनि को ‘शब्द’ कहा गया है। किंतु भाषा दर्शन में इसे भिन्न-भिन्न रूपों में देखा गया है। ‘शब्द’ की उत्पत्ति संस्कृत शब्द से हुई जिसे "भाषण ध्वनि" के लिये संदर्भित किया गया। संस्कृत व्याकरण में ‘शब्द’ भाषाई प्रदर्शन के अर्थ में एक उच्चारण को संदर्भित करता है।

शब्द ‘स्फोट’ और ध्वनि के माध्यम से प्रकट होते हैं, और इनके प्रकट होने के लिये मुख्य रूप से स्फोट को उत्तरदायी माना जाता है। स्फोट भारतीय व्याकरण की परम्परा एवं पणिनि दर्शन का एक महत्वपूर्ण विषय है। कुछ लोग स्फोट (जिसे नित्य भी कहा जाता है) को संसार की उत्पत्ति का मूल स्रोत मानते हैं। स्फोट सिद्धांत भर्तृहरि द्वारा दिया गया एक विशेष योगदान है। यह शब्द संस्कृत मूल ‘स्फुट’ से लिया गया है जिसका अर्थ है फूटना या प्रस्फुटन। भर्तृहरि का मानना था कि कोई भी शब्द वक्ता के दिमाग में स्फोट के रूप में मौजूद होता है। जब विचारों को एक रूप देने की प्रक्रिया शुरू होती है, यह एक क्रम में विभिन्न ध्वनियों की एक श्रृंखला का निर्माण करता है जो शब्द के अर्थ के रूप में प्रकट होते हैं। ऐसा लग सकता है कि उन शब्द-ध्वनियों को समय और स्थान में अलग किया गया है, लेकिन, वे वास्तव में एक ही इकाई का हिस्सा हैं जिसे स्फोट कहते हैं। यह एक श्रव्य शब्द के अमूर्त या वैचारिक रूप को भी संदर्भित कर सकता है।

इसके विपरीत ध्वनि को आत्मा की कविता के रूप में संदर्भित किया गया है। इसका उपयोग अथर्वेद में किया गया। **“पतंजलि के अनुसार शब्द का स्थायी पहलू स्फोट है जबकि ध्वनि शब्द के लिये अल्पकालिक है। स्फोट, ध्वनि की वैचारिक इकाई है जबकि इसके विपरीत ध्वनि शब्द का भौतिक रूप है।“**

1. शब्द और अर्थ के संबंध और शब्दार्थ की समस्या के बारे में जो कुछ भी प्राचीन भारतीय दार्शनिकों ने लिखा है, उस की जानकारी व्यापक रूप से ज्ञात नहीं है। यह वास्तविकता है कि यह मीमांसा इतनी विचारोत्तेजक और आधारभूत है कि वर्तमान युग की नई साहित्यिक थ्योरी के संदर्भ में उस पर नए सिरे से विचार हो सकता है।
2. शब्दार्थ-दर्शन के परिप्रेक्ष्य में यह देखा जाना है कि इस विषय पर भारतीय परंपरा में क्या-क्या बहसें उठाई गई हैं और भारतीय मानस का दृष्टिकोण क्या रहा है।
3. आधुनिक युग में उपभोक्तावाद और उपभोक्ता प्रतिक्रिया का शब्दार्थ के माध्यम से सही संवेदना का पता कैसे किया जा सकता है।

साहित्य पुनरलोकन:

1. प्राचीन काल की शिक्षा प्रणाली ज्ञान, परंपराएं और प्रथाएं मानवता को प्रोत्साहित करती थीं। पुराण में ज्ञान को अप्रतिम माना गया है (ब्रह्माण्ड पुराण, 1/4/15)। भारत के तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, बल्लभी, उज्जयिनी, काशी आदि विश्व प्रसिद्ध शिक्षा एवं शोध के प्रमुख केन्द्र थे तथा यहां कई देशों के शिक्षार्थी ज्ञानार्जन के लिए आते थे। वैदिक काल में महिलाओं की शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रसिद्धि थी जिसमें मैत्रेयी, ऋतम्भरा, अपाला, गार्गी और लोपामुद्रा आदि जैसे नाम प्रमुख थे। बोधायन, कात्यायन, आर्यभट्ट, चरक, कणाद, वाराहमिहिर, नागार्जुन, अगस्त्य, भर्तृहरि, शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे अनेकानेक महापुरुषों ने भारत भूमि पर जन्म लेकर अपनी मेधा से विश्व में भारतीय ज्ञान परंपरा के समिद्ध हेतु अतुल्य योगदान दिया है।(5).
2. भाषा, जो ज्ञान का प्रमुख माध्यम है, वह ज्ञान का पैमाना बन गई। शिक्षा में स्वराज्य एक स्वप्न बनता गया। अंग्रेजी उन्नति की सीढ़ी बन गई। जो अंग्रेजी जाने वही कुलीन और योग्य करार दिया जाने लगा। सामाजिक भेदभाव और सामाजिक दूरी ही नहीं स्वास्थ्य, कानून और न्याय आदि से जुड़ी नागरिक जीवन की सामान्य सहूलियतें भी इससे जुड़ गईं। बारह पंद्रह प्रतिशत लोगों की अंग्रेजी अस्सी प्रतिशत से अधिक भारतीय जनों की भाषाओं पर भारी पड़ रही है। इस बाध्यता के चलते पढ़ाई-लिखाई और अध्ययन-अनुसंधान परोपजीवी होता गया। मौलिकता और सृजनात्मकता की जगह अनुकरण , पुनरुत्पादन और पिष्ट-पेषण की जो प्रबल धारा प्रवाहित हुई उसने घोर अंधानुकरण को बढ़ावा दिया। उसने देश-काल और संस्कृति से काटने के साथ जिस दृष्टिकोण को स्थापित और संवर्धित किया उसके चलते हम बिना किसी द्वंद्व के उस यूरो-अमेरिकी नजरिये को ही सार्वभौमिक मान बैठे जो मूलत: सीमित, स्थानीय और एक खास तरह का 'देसीÓ ही था, परंतु आ्थक-राजनीतिक तंत्र के बीच पश्चिम से निर्यात किया गया। यह कितना अनुदार रहा यह इस बात से प्रमाणित होता है कि इसने भारतीय ज्ञान परंपरा को अप्रासंगिक और अप्रामाणिक ठहराते हुए प्रवेश ही नहीं दिया गया या फिर उसे पुरातात्विक अवशेष की तरह जगह दी गई। उसका ज्ञान सृजन के साथ कोई सक्रिय रिश्ता नहीं बन सका।(6).

विश्लेषण:

आमतौर पर किसी वस्तु की गुणवत्ता के स्थान पर उसकी चमक धमक , सामाजिक प्रतिष्ठा आदि को सर्वोपरि रख कर सोचना , अधिक से अधिक वस्तुओं के स्वामी बनने की लालसा करना चाहे वो उपयोगी हो या न हो इन्हीं सब को उपभोक्तावाद कहा जाता हैं। भूमंडलीकरण या वैश्विकरण से जब सम्पूर्ण विश्व एक गाँव की तर्ज पर कार्य करने लगा व्यापार के खुले रास्ते , बड़ी बड़ी कंपनियों को कही भी व्यापार करने की स्वतंत्रता आदि ने जहाँ एक और तकनीक का हस्तांतरण तो किया ही साथ में संस्कृति का भी हस्तांतरण हुआ।

उपयोगकर्ता द्वारा तैयार की गई सामग्री विभिन्न उत्पादों और सेवाओं पर लोगों की भावना / राय को जानने के लिए जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत है। वेब 3.0 के युग के परिणामस्वरूप बड़ी मात्रा में हिंदी टिप्पणियाँ प्राप्त हुई है।

लोगों तक पहुँच रहे सुविधाजनक तकनीक आसानी से विकसित हो रही है। तकनीक के माध्यम से ई-कॉमर्स प्लेटफ़ॉर्म के व्यापक प्रसार का नेतृत्व किया है। इन ई-कॉमर्स ने दैनिक आधार पर उत्पन्न जानकारी की मात्रा में तेजी से वृद्धि की है। इस प्रकार डाटा का रखाव करना और उपयोगकर्ता की भावनाओं, इच्छाओं, पसंद और नापसंद की पहचान करना एक महत्वपूर्ण कार्य है जिसने पिछले एक दशक से अनुसंधान समुदाय का ध्यान आकर्षित किया है। विश्वव्यापी वेब जनता की राय को इकट्ठा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है, ये राय व्यवसाय से संबंधित निर्णय लेने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। किसी एक ही शब्द का भिन्न-भिन्न वाक्यों में प्रयुक्त होने पर उसका अर्थ परिवर्तित हो जाता है।

उदाहरण- अ. ज्यादा **चीनी** खाने से सेहत पर प्रभाव पड़ता है।
ब. हमारे देश के बार्डर से **चीनी** भाग खड़े हुए।

उपरोक्त दोनों वाक्यों में प्रयुक्त शब्दों में चीनी शब्द एक ही है परंतु अर्थ अलग-अलग निकल रहा है।

1. पाठ के संदर्भ को पहचानना एक महत्वपूर्ण चुनौती बन जाता है। संदर्भ के आधार पर शब्द का व्यवहार / उपयोग एक अच्छे मतलब में बदलता है।

उदा0-1 इस उपन्यास की कहानी **लंबी** है।
उदा0-2 इस दवा का प्रभाव काफी अच्छा है।
उदा0-3 सैमसंग गैलेक्सी की बैटरी लाइफ **लंबी** है।

उपरोक्त सभी 3 उदाहरणों में, दीर्घ का अर्थ समान है- समय की अवधि या पारित होने का संकेत। उदा0 -1 और उदाहरण -2 में **"लंबी"** ऊब को इंगित करता है इसलिए नकारात्मक अभिव्यक्ति जबकि उदा0 -3 में **"दीर्घ"** दक्षता को इंगित करता है इसलिए सकारात्मक अभिव्यक्ति।
उपरोक्त उदाहरणों की मदद से, यह स्पष्ट है कि समान अर्थ वाले एक ही शब्द के संदर्भ के आधार पर कई उपयोग हो सकते हैं। इसलिए, पाठ में व्यक्तिपरक जानकारी खोजने के लिए संदर्भ का पता लगाना महत्वपूर्ण हो जाता है

2. **"कटाक्ष"** को एक तेज, कड़वा या काटने वाली अभिव्यक्ति या टिप्पणी के रूप में परिभाषित किया गया है; एक कड़वा या ताना आमतौर पर विडंबना या समझ के माध्यम से अवगत कराया गया है। मनुष्य के लिए व्यंग्य की व्याख्या करना एक कठिन कार्य है, मशीन को समझने में सक्षम बनाना एक अधिक कठिन कार्य है। कटाक्ष के कुछ उदाहरण –

उदा0-1 सभी पुरुष परेशान नहीं हैं। कुछ मर चुके हैं।
उदा0-2 तुषार ने क्या शानदार फिल्म दी, मैंने कभी उसकी फिल्म नहीं देखी।

Year-6 Volume: II, April-June, 2024 Issue-22 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

उपर्युक्त उदाहरणों से पता चलता है कि यह वाक्य किसी के प्रति व्यंग्य कर रहा है। काव्य भाषा के अंतर्गत आनंदवर्धन ने ध्वनिसिद्धांत में व्यंग्य को विस्तार से गुणीभूतव्यंग्य- काव्य में आठ प्रकार से व्याख्या कि है। इन्ही को आधार बनाकर उपर्युक्त व्यंग्य का निर्धारण किया गया है।

निष्कर्ष

इस प्रकार यह देखा जा सकता है कि कभी- कभी आधुनिक के हवाले से प्राचीन या प्राचीन का कोई हिस्सा नया हो जाता है या नई अर्थ हासिल कर लेता है। विभिन्न भाषा दार्शनिकों ने शब्द और अर्थ की व्याख्या अपने-अपने ग्रंथों में भिन्न-भिन्न प्रकार से की है। इन्हीं को देखते हुए आधुनिक युग में सोसल मिडिया पर मौजूद उत्पाद प्रतिक्रियाओं का विश्लेष कर शब्दार्थ के माध्यम से उनका सही अर्थ और भावनाओं की पहचान किया गया, जो उपराक्त उदाहरणों में दिखाया गया है। चुकी वैयाकरणों ने शब्द के दो रूप माने है। स्फोट और वैखरीरूप से दो प्रकार के शब्दों में कार्यकारणभाव माना गया है, शब्दों के स्फोट और वैखरीरूप से साधारण वाक्य और व्यंग्यात्मक वाक्य का वर्गीकरण हो सका और उनका पहचान किया गया। आज कल ऑनलाइन बाजार होने के नाते उपभोक्ताओं द्वारा प्रतिक्रियाओं का महत्व उतना ही बढ़ जाता है। जिसके लिए उनकी व्यक्त भावनाओं को सही-सही पता लगाना अति महत्वपूर्ण हो जाता है । इसको ध्यान में रखते हुए वाक्यों का विश्लेषण हिंदी भाषा के व्याकरणिक कोटियों द्वारा किया जा सकता है। जैसे – क्रिया, क्रियाविशेषण, अव्यय इत्यादि।

संदर्भ ग्रंथसूची:

1. भर्तृहरि, (हिन्दी व्याख्याकार, शुक्ला पंडित सुर्यनरायण, शुक्ला पंडित रामागोबिन्दा) (1961). ***वाक्यपदीयम्***. चौखम्बा संस्कृत सीरिज आफिस, पोस्ट बाक्स नं. 8 वाराणसी.
2. पाणिनि, (अंग्रेजी अनुवाद, बासु श्रीचंद्रा), (1897) . ***अष्टाध्यायी***.सिंधु रचन बोस.
3. आनंदवर्धन, (व्याख्यालेखन, डॉ. रामसागर त्रिपाठी).(1963). ***ध्वन्यलोकः***. मोतीलाल बनारसीदास वाराणसी.
4. मुक्तिबोध, गजानन माधव.(2019).***भारत इतिहास और संस्कृति***. राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. दरियागंज दिल्ली.
5. तिवारी, रविन्द्र नाथ.(2021). ***भारतीय ज्ञान परम्परा और राष्ट्रीय शिक्षा नीति***. राष्ट्रीय शिक्षा बेब पोर्टल.
6. मिश्रा, गिरिश्वर.(2021). ***भारतीय ज्ञान परंपरा को पहचानने का समय***.ENSEMBLE Online Portal.

***